आचार्य भावसेन त्रैविद्य

जीवन-परिचय : आचार्य भावसेन त्रैविद्य मूलसंघ सेनगण के आचार्य थे। ये अपने समय के प्रभावशाली विद्वान रहे हैं। आचार्य भावसेन को त्रैविद्य चक्रवर्ती आदि विशेष उपाधियाँ दी गयी हैं। जैन आचार्यों में शब्दागम (व्याकरण) तर्कागम (दर्शन) तथा परमागम (सिद्धान्त) इन तीनों विद्याओं में निपुण व्यक्ति को 'त्रैविद्य' की उपाधि दी जाती थी। इससे स्पष्ट है कि भावसेन तर्क, व्याकरण और सिद्धान्त इन विषयों के मर्मज्ञ विद्वान थे। साथ ही वैद्यक, संगीत, काव्य और नाटक आदि विषयों के भी ज्ञाता माने जाते हैं।

भावसेन त्रैविद्य ने अपने व्यवहार के सम्बन्ध में 'विश्वतत्त्वप्रकाश' ग्रन्थ के अन्त में लिखा है कि—दुर्बलों के प्रति मेरा अनुग्रह रहता है, समान व्यक्तियों के प्रति सौजन्य और श्रेष्ठ एवं विद्वानों के प्रति सम्मान का व्यवहार किया जाता है, किन्तु जो अपनी श्रेष्ठ बुद्धि के कारण घमंड करते हैं, स्पर्धा करते हैं, उनके गर्वरूपी पर्वत के लिए मेरे वचन वज्र के समान होते हैं।

समय-निर्धारण : भावसेन त्रैविद्य का समय ईसा की 13वीं शताब्दी का अन्तिम भाग माना जाता है।

रचना-परिचय : डॉ. विद्याधर जोहरापुरकर ने 'विश्वतत्त्वप्रकाश' की प्रस्तावना में भावसेन त्रैविद्य की दश रचनाएँ बतलाई हैं—1. विश्वतत्त्वप्रकाश, 2. प्रमाप्रमेय, 3. कथाविचार, 4. शाकटायन व्याकरण टीका, 5. कातन्त्ररूपमाला, 6. न्याय सूर्यावली 7. भुक्तिमुक्तिविचार, 6. सिद्धान्तसार, 9. न्यायदीपिका, 10. सप्त पदार्थी टीका।

किन्तु इनमें से मात्र तीन रचनाएँ ही प्रकाशित और उपलब्ध हैं—

1. विश्वतत्त्वप्रकाश : इसमें आचार्य उमास्वामी द्वारा रचित तत्त्वार्थसूत्र के मंगलाचरण 'ज्ञातारं विश्वतत्त्वानां' पर विशाल ग्रन्थ लिखने का प्रयास किया है। इसमें उन्होंने 'मोक्षशास्त्रे विश्वतत्त्वप्रकाशे' रूप में उल्लेख करते हुए ग्रन्थ का

प्रथम अध्याय लिखा है। साथ ही चार्वाक, सांख्य आदि दर्शनों के सिद्धान्तों का भी खंडन किया है।

2. प्रमा-प्रमेय : इस ग्रन्थ में भी दार्शनिक चर्चा की गयी है। इसके मंगल पद्य में 'प्रमाप्रमेयं प्रकटं प्रवक्ष्ये' अर्थात् 'प्रमाप्रमेय का कथन कहता हूँ।' इस वाक्य द्वारा प्रमाप्रमेय ग्रन्थ को बनाने की प्रतिज्ञा की गयी है।

ये दोनों ग्रन्थ 'जीवराज ग्रन्थमाला' शोलापुर से प्रकाशित हो चुके हैं।

3. कातन्त्ररूपमाला : कातन्त्ररूपमाला में व्याकरण के सूत्रों के अनुसार शब्द रूपों की सिद्धि का वर्णन आया है। ग्रन्थ दो भागों में विभक्त है। पूर्वार्द्ध भाग 574 सूत्रों द्वारा सन्धि, नाम, समास और तद्धित के रूपों की सिद्धि की गयी है। उत्तरार्द्ध (बाद के) भाग में 809 सूत्रों द्वारा तिङन्त कृदन्त के रूपों का वर्णन है। कातन्त्ररूपमाला यह नाम भावसेन का दिया हुआ है। यों इस ग्रन्थ का नाम 'कलाप और कौमार' भी है। संस्कृत-भाषा के आरम्भिक अभ्यासियों के लिए यह ग्रन्थ बहुत उपयोगी है।